

CLASS-14: Summary

1. हमने जाना कि **सिर्फ** सिद्ध भगवान और चौदहवें गुणस्थान वाले अयोगी केवली के सभी प्रदेश अचल होते हैं
 - a. क्योंकि अरिहंत भगवान भी कायवान हैं
 - b. और उनके भी काययोग, वचनयोग और एक अपेक्षा से द्रव्य मनोयोग चलता है
 - c. इसलिए उनके भी सभी प्रदेश अचल नहीं होते
2. मुनि श्री ने समझाया कि आत्मा के प्रदेशों का अनुभव हम उदहारण से समझ सकते हैं
 - a. जैसे बहुत तेज धूमने पर
 - b. चलायमान प्रदेश की speed ज्यादा हो जाती है
 - c. और हमें सभी चीजें धूमती नजर आती हैं
 - d. vision stable नहीं होता और
 - e. ज्ञान कहीं स्थिर नहीं रहता
3. इसी प्रकार जब शरीर **भय या गुस्से** से कांपता है तो आत्मप्रदेश ज्यादा कंपायमान हो जाते हैं
 - a. गुस्से में व्यक्ति की आँखों के सामने अंधेरा सा और शरीर में कंपन होता है
 - b. वह बोल भी नहीं पाता
 - c. क्योंकि उस समय आत्मा के प्रदेश ज्यादा चलायमान होते हैं
 - d. ऐसे समय में उससे कुछ भी कहना, समझाना बेकार होता है
4. इसी प्रकार का अनुभव किसी अप्रत्याशित घटना घटने पर होता है
 - a. शरीर में कंपन हो जाता है
 - b. हम कर कुछ रहे होते हैं और हो कुछ और रहा होता है

5. संसारी जीव में चल और अचल प्रदेशों के माध्यम से हमेशा कर्मों का आत्मव भी होता रहता है

- a. लेकिन चल प्रदेश सब से ज्यादा होते हैं
- b. किसी भी प्रकार की क्रियाओं से खुद को जोड़ने से प्रदेशों में चलपना अधिक हो जाता है
- c. चाहे वो क्रियाएँ सोचनेवाली हों, बोलनेवाली, बैठे-बैठे करने वाली या कोई और

6. आत्मा के प्रदेश, करोड़-करोड़ पूर्व कोटी आदि से भी बहुत ज्यादा, **असंख्यात संख्या** में होते हैं

- a. यानि हमारा खुद का अस्तित्व छोटा-मोटा नहीं है!
- b. बहुत बड़ा है

7. इन असंख्यात प्रदेशों में अगर कोई उथल-पुथल, खलबली मचती है

- a. तो वह हमारा ही system खराब करती है
- b. जैसे भयभीत, क्रोधित होने पर पूरे शरीर में अलग तरीके के vibration होते हैं

8. या चिंतित आदमी को भूख नहीं लगती

- a. क्योंकि उसके सारे प्रदेश और उनका ज्ञान एक तरफ चला गया
- b. पेट को अपना function करने के लिए जो energy चाहिए थी
- c. वह चिंता में लग गयी
- d. यह आर्त ध्यान होता है

9. इस प्रकार आत्मा के प्रदेशों में होने वाले परिणमन को समझने से हम प्रदेश को समझ सकते हैं

10. आकाश के अनन्त प्रदेश हैं

- a. लेकिन अनन्त आत्माओं के असंख्यात प्रदेश अनन्त आकाश में नहीं रह रहे
- b. असंख्यात प्रदेश वाले लोकाकाश में ही रह रहे हैं

11. हमने जाना कि जब कोई चीज **एक होती** है

- a. तो किसी अपेक्षा से उसमें अनेकपना भी होता है
- b. यही **अनेकांत** है
- c. जैसे आकाश एक अखंड द्रव्य है
- d. किन्तु लोकाकाश और अलोकाकाश की अपेक्षा इसमें खण्ड हो जाते हैं
- e. अनेकपना आ जाता है

12. द्रव्य का स्वभाव एक-अनेक रूप होता है

13. हर द्रव्य जैसे धर्म, अधर्म द्रव्य में एकत्व भी है और अनेकत्व भी है

- a. क्योंकि अगर वे बिना अनेकता के एकरूप हो गए
- b. तो भी द्रव्य का स्वभाव नहीं बनेगा

14. उदाहरण के लिए कोई व्यक्ति अपने आप में तो एक है

- a. लेकिन उसके हाथ, पैर, आँख, नाक, नाखून, घुटने, blood आदि सब अनेक हैं
- b. इन अनेकों के साथ में भी वह एक है

15. इसी प्रकार लोकाकाश अनेक रूप में देखने को मिलेगा

16. पूरे लोकाकाश में एकपना तो है लेकिन हर point पर अनेकपना भी है

- a. कहीं पर असंख्यात पुद्गल द्रव्य हैं तो कहीं अनन्त पुद्गल द्रव्य
- b. किसी point पर त्रस जीव ज्यादा हैं तो किसी पर स्थावर जीव
- c. कहीं पर सिद्ध जीव हैं तो कहीं पर नहीं हैं
- d. हमें सर्वज्ञ बन कर ही **यह** अनेकता दिखेगी

17. इसी प्रकार जीव के प्रदेश भी अलग-अलग रूप में होते हैं

- a. उसके हर point पर अनेकपना होता है